IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

DR BHASKARACHARYA TRIPATHI KA RACHNA SAMPARDAYA

Dharam Singh

Assistant Professor of Sanskrit

Govt College Bhattu Kalan (Fatehabad)

डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी का रचना – सम्प्रदाय –

डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी वैष्णव सम्प्रदाय से संबद्ध होकर भी अत्यन्त उदारमना तथा प्रगतिशील मान्यताओं के प्रतिष्ठित संस्कृत कवि हैं। स्नेहसौवीरम् नाटक के प्रारम्भ में आपने गणेश तथा श्री राम की स्तुति की है। इससे भी उनका वैष्णव सम्प्रदाय तथा उपर्युक्त दृष्टिकोण से सम्बद्ध होना सुनिश्चित हो जाता है। उन्होने स्नेहसौवीरम् नाटक समर्पण करते हुए अपने माननीय श्वशुर श्री ब्रह्मदीन तथा प्रयाग के रामसागर नामक वैष्णव तीर्थ के सन्त अपने मातुल श्री हुबलाल का स्मरण किया है।

डॉ0 भास्कराचार्य की पारिवारिक परम्परा में भी यही उदार दृष्टिगोचर होता है। आपके पितामह श्री रामगुलाम त्रिपाठी अपने समय के विख्यात कवि थे। उनके द्वारा प्रणीत ''आरिनाशक–दुर्गाशतकम्'' आज भी देवी के उपासकों में लोकप्रिय है पर उनका वैष्णव सम्प्रदाय अविच्छिन्न रहा है। डॉ0 त्रिपाठी का समग्र कुटुम्ब संस्कृत भाषा से भी गहनतया सम्बद्ध है। आपकी धर्मपत्नी श्रीमति प्रभावती त्रिपाठी हिन्दी कविताओं के क्षेत्र में गोष्ठियों तथा आकाशवाणी मे भाग लेती रही हैं तथा आचार्य जी को भी संस्कृत कविता–सर्जन में सहयोग प्रदान करती है।

आचार्य जी के एकमात्र सुपुत्र श्री निलिम्प त्रिपाठी भी संस्कृत के विशिष्ट प्रतिभाशाली हस्ताक्षर हैं। वे महर्षि महेशयोगी वैदिक विश्वविद्यालय भोपाल में व्याख्याता पद पर नियुक्त हैं। कवि ने प्रायः अपनी सभी रचनाओं की भूमि में उनके तथा अन्य संस्कृतज्ञ भतीजों के सक्रिय सहयोग का उल्लेख किया है। उदाहरणार्थ मृत्कूटम् में ..... ''बाल्यतः काव्यकृत् सूनृतैःसर्वजित् कामरूपांकितोऽयं निलिम्पः सुतो वान्धवी च प्रजा तुल्यशीलव्रजां।'' श्री निलिम्प त्रिपाठी के व्यक्त्वि तथा संस्कृत अभिरूचियों के सम्बन्ध में लघु–रघु में लिखा है –

कनक रूचिर तनुविनयितनय

ऋतुपतिमिव विधुर धवलयत्,

ज्यति च निजकुलविबुध वचन

थ्मति तदु बुधशिशुरूदवलयुत्।[1]

कृतियां :–डॉ0 भास्कराचार्य की अब तक प्रकाशित रचनाएं गद्यद्वादशी, अजाशती, लक्ष्मीलांछनम्, सुतनुकालास्यम्, मृत्कूटम्, कवि भवभूति और उनका नाटयलोक, सम्पादन–मानसमधु, दूर्वा, भोजभारती, संस्कृतजीवनम् निर्झरिणी नीतिसन्दर्भ, मानस के मोती, संस्कृत की पहचान, बदले पंख तथा अच्छी हिन्दी और स्नेहसौवीरम् हैं। आपका अनुवाद–समीक्षा ग्रन्थ बालरामायणम् (भाग–2) भी प्रकाशित एवं बहुचर्चित है। इनकी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है :–

1. गद्यद्वादशीं :– रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर से 1975 के आपसपास प्रकाशित यह एक कक्षोपयोगी महत्वपूर्ण गद्यसंकलन है, जिनके अर्द्धाधिक पृष्ठों में संस्कृत गद्य–साहित्य का इतिहास उपनिबद्ध किया गया है। भूमिका के अनन्तर विभिन्न तेरह शीर्षकों में महत्वपूर्ण संस्कृत गद्य के अनुच्छेद संकलित हैं तथा अन्त में उन पर व्याकरणात्मक व्याख्या दी गई हैं। गद्यद्वादशी का प्रणयन डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी ने रायपुर के संस्कृत की सहायक प्राध्यापिका डॉ0 मनीषा पाठक के साथ संयुक्त उपक्रम में किया है।
2. अजाशतीं :– यह डॉ0 त्रिपाठी का एक महत्वपूर्ण बाल–कथा काव्य है, जिसका प्रणयन उन्होने 20 वर्ष की अवस्था में ही किया था। इसका प्रकाशन सर्वप्रथम साहित्य अकादमी नई दिल्ली की संस्कृत पत्रिका ''संस्कृत प्रतिभा'' में 1964ई0 में हुआ था। इस काव्य की पाण्डुलिपि देखते ही पत्रिका के तत्कालीन सम्पादक डॉ0 वी0 राघवन् (मद्रास) ने डॉ0 त्रिपाठी को बालकवि विरूद से अलंकृत किया था। यह कथा काव्य अब पुनः हिन्दी काव्य अनुवाद तथा उपयुक्त चित्रों के साथ प्रकाश्यमान है। अजाशतीं की सरल प्रवाहमयता बरबस पाठकों को आकर्षित करती है। यथा –

यदापि दूराद् विचुकूज पेचको

यदा च खद्योतचयाश्चकाशिरे

तदैव साऽलं भयभारभंगुरा

मृतेव जीवन्त्यपि शिश्रिये महीम्।[1]

इस काव्य में जंगल में भटकी हुई एक लंगड़ी बकरी की रोचक कथा 109 छन्दों में पल्लवित की गई है। वह बकरी चाँदनी के प्रकाश में एक शेर के पंजे का निशान देखकर उसी के निकट बैठती है तथा अनके हिंस्र पशुओं को सिंह का भय दिखाकर भगा देती है। अन्त में सिंह उसकी चतुराई सुनकर उसे अभय तथा सुरक्षा प्रदान करता है। बड़ों का सहारा सदा उन्नतिकारक होता है, यह इस कथा काव्य का शाश्वत सन्देश है।

1 अजाशती श्लोक 28

3 लक्ष्मींलांछनम् :– भारत पर चीन आक्रमण के समय कवि ने इस ओजस्वी रूपक का प्रणयन किया था, जिसका प्रकाशन 'संस्कृत–प्रतिभा' में किया गया था। अब यह संस्कृत रूपक पुनः परिभंगित रूप में हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाश्यमान है। यह रूपक एक समय तक गुरूनानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर (पंजाब) से सम्बद्ध संस्थाओं की स्नातक कक्षाओं में पढ़ाया भी जाता रहा है। स्थालीपुलाकन्यायेन उत्कृति से एक वीर रस श्लोक उदाहृत किया जा रहा है :–

यावद् गंगा त्रिलोकीमतिविमलजलप्लावयित्री पुनीते

शम्भोमूर्द्धानमूध्वं धवलयति विधोरर्धलेखा च यावत्

तवत् सर्वैः समेत्य प्रचुरदलबलाद् दारितारातिवर्गैः

नीचश्चीनः प्रचंयत्परिधनिभभुजैर्भारतीयैर्जितः स्यात्।[1]

4. सुतनुकालास्यम् :– यह एक संस्कृत रूपक है, जो विश्व की प्राचीनतम् नाट्यशाला रामगढ़ (सरगुजा, मध्य प्रदेश) के शिलालेख में अंकित महाकवि कालिदास की प्रणयिनी देवदासी (नृत्यांगना) सुतनुका की प्रणय संवदेदनाओं पर आधारित है। इस रूपक का प्रकाशन शताब्दी के आठवें दशक में भारतीय विद्याभवन की संस्कृत पत्रिका 'सविद' में हुआ था। अब सुतनुकालास्यम् का परिवर्धित रूप में हिन्दी अनुवाद स्वतंत्र प्रकाशन किया जा रहा है।

5. मृत्कूटम् :– संस्कृत साहित्य के इतिहास में शतक काव्यों का अपना एक विशिष्ट स्थान है। मृत्कूटम् डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी का एक महनीय शतक काव्य है। श्री गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ इलाहाबाद से 1992 में प्रकाशित यह कृति वर्तमान संस्कृत शतक काव्यों का एक प्रतिमान बन चुकी है। इसमें जीवन की विभिन्न अवस्थाओं को अभिनव मर्मस्पर्शी प्रतीकों के माध्यम से प्रतिबिम्बित किया गया है। दण्डक छन्द में आचार्य जी ने इसकी भूमिका लिखी है। संस्कृत परम्परा के धुरीण हस्ताक्षर आचार्य बच्चूलाल जी ने पुस्तक के प्रारम्भ में ही इसकी समीक्षा की है। मृत्कूटम् का समर्पण भगवान राम के प्रति श्री त्रिपाठी के अनन्य भाव को प्रतिभासित करता है।

शून्या पाषाण पही युवतितनुकलां वन्य दूर्वास्त्र लीलां
सिन्धुः स्वाल्पान्धुभूयं क्षितिपतिपदवीं पादुकाचापिदावीं
निन्ये तारेयकस्य प्लुतचरचरणों येन मेराः प्रभारं
जाये तासौ वदान्यः शिशुजनवचने कच्छपीझकृतिः सन्।

मृत्कूटम में मानव जीवन के उहापोह को बड़ी सहजता से रूपायित किया गया है। भ्रूण से लेकर मुमूर्ष तक की स्थितियों का इस काव्य में अत्यन्त हृदयग्राहीं वर्ण है। सचित्र काव्य मृत्कूटम् को दस भागों में बांटा गया है। प्रत्येक भाग मनुष्य के प्रायः दस–दस वर्षो का प्रतिनिधित्व करता है। इस तरह सौ श्लोकों में सौ वर्षो का सुरम्य काव्यात्मक समावेश परिलक्षित होता है। मृत्कूटम् का संस्कृत जगत् ने अनेक घरों में नित्य पारायण तथा विभिन्न प्रतिष्ठानों में पुरस्कारों द्वारा हार्दिक अभिनन्दन किया है।

1 लक्ष्मींलांछनम्, भरतवाक्यम्।

6. कवि भवभूति ओर उनका नाट्यलोक :– इस शोध – समीक्षा परक ग्रन्थ की रचना आचार्य जी ने डॉ0 राधावल्लभ त्रिपाठी के साथ संयुक्त उपक्रम से की है। पुस्तक का प्रकाशन संस्कृत परिषद् सागर मध्य प्रदेश द्वारा 1987 में किया गया था। भवभूति की काव्य यात्रा और उनकी गहन संवेदनाओं को समझने परखने में यह ग्रन्थ छात्रों तथा शुद्धिजनों द्वारा बहुधा सन्दर्भित किया जाता है।

7 दूर्वा :– मध्यप्रदेश संस्कृत अकादमी के संस्थापक सचिव रूप में डॉ0 त्रिपाठी ने 'दूर्वा' पत्रिका के 25 अंक सम्पादित एवं प्रकाशित किये थे। इस पत्रिका का महत्व इस तथ्य से समझा जा सकता है कि इस अकेली पत्रिका पर सागर, कानपुर और पूना विश्वविद्यालयों से पी.एच.डी. शोध किये जा चुके हैं। दूर्वा का प्रवेशांक 25 जनवरी 1986 को उन्मीलित हुआ था। पत्रिका के तृतीयांक (मैथिलीशरण स्मृतिः) पष्ठांक (आकाशवर्णिनी स्वतंत्रता) तथा मधुछन्दाः पाटलसुरभिः और विश्व–कविता आदि विशेषांक बड़े ही अनूठे है। यह पत्रिका अनके दूतावासों के माध्यम से विश्व फलक पर प्रतिष्ठित हो गई थी। साहित्य अकादमी नई दिल्ली के एक प्रतिष्ठित जर्नल में दूर्वा की उन्मुक्त प्रशंसा करते हुए डॉ0 रामकरण शर्मा ने लिखा है कि –

> The Madhya Pardesh Sanskrit Academy's literary jounnalDurva continued to maintain its high literary standards. The visva kavita visesanka (Jan 1989). The Jijivisa visesanka (Aug) including 'yatana' by Bacchulal Awasthi, 'Rajani Niravata' by shri Nivasa Rath, Gramatika by Reva Prasad Dwivedi and Prabodhini visesanka (Nov.) are specially worth reading. Bhaskaracharya Tripathi the editor deserves special Commendation for maintain its distinct linguistic stylistic and aesthetic excellence as a respresentative literary journal.[1]

8. भोजभारतीं :– भोजभारती डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी द्वारा सम्पादित मध्य प्रदेश संस्कृत अकादमी की इस संस्कृत हिन्दी मिश्रित सुललित पत्रिका का एक अंक 1992 में प्रकाशित हुआ है।

9. बालरामायणम् :– डॉ0 त्रिपाठी द्वारा अनुवाद और समीक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कीर्तिमान है, 1995 में नाग प्रकाशक नई दिल्ली द्वारा दो जिल्दों (लगभग 850 पृष्ठ) में प्रकाशित बालरामायणम् इसके प्रथम भाग में रामकथा परक नाटक बालरामायणम् की तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक गहन समीक्षा मिलती है तथा द्वितीय भाग में राजशेखर के इस महानाटक का शोध–परक दृष्टि से पाठ–निर्धारण और हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया गया है।

10. संस्कृतजीवनम् :– यह डॉ0 त्रिपाठी के ललितगद्य निबन्धों का एक महत्वपूर्ण संकलन है जो निलिम्पकाव्यम् द्वितीयस्पन्दः के रूप में नाग प्रकाशक नई दिल्ली से 1987 में प्रकाशित हुआ था। ग्रन्थ प्रमुखतः दो भागों में विभाजित है – 1 आकल्पः और 2 गवेषणा। इस पुस्तक से आचार्य जी की सुरम्य गद्य–शैलियों का परिचय मिलता है। कहीं–कहीं तो वे दण्डी और बाण की गद्य स्निग्धता को भी मात देते दिखलाई पड़ रहे हैं। प्रयाग विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ0 सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव ने तो उनकी शैली को स्वतंत्र रूप से भास्कर शैली का नाम दिया है।

1. Indian literature (March/April 1991), Sanskrit scence. Everflowing stream p. 164

11. निर्झरिणीं :– निलिम्प काव्यम् प्रथमस्पन्दः के रूप में 1985 में प्रकाशित निर्झरिणी कवि की संस्कृत गीतमालिकाओं का एक मनोहर संगुम्फन है। निर्झरिणी भी दो पुलिनों में प्रवाहित है – गीति पुलिनम् और पद्य पुलिनम्। इसमें नवतरंगों के अन्तर्गत संस्कृत रचनाएं प्रकाशित की गई है। वीर्थ, लोक, प्रकृति, वाक् विभ्रम, सत्त्व, संवेदन, वर्ण सूक्ति।

12. लघु–रघु :– लघु–रघु एक अद्भुत संस्कृत काव्य है जिसमें सात हजार से अधिक लघु वर्णो में ही अठारह शीर्षकों के अन्तर्गत संस्कृत काव्यों की संरचना की गई है। यह डॉ0 त्रिपाठी का निश्चय ही ऐतिहासिक कीर्ति स्तम्भ है। क्योंकि समूचे विश्व की किसी भी भाषा में कभी भी ऐसा काव्य नही लिखा गया जिसमें 7000 अक्षरों तक कोई दीर्घ वर्ण आये ही नहीं। अनेक साहित्यिक संस्थाओं ने कवि की इस उपलब्धि के रेखांकन हेतु **"गिनीज बुक आफॅ रिकार्ड"** से पत्र सम्पर्क भी किया है। वस्तुतः यह प्रेरणा उन्हें मूलतः स्नेहसौवीरम् की रचना करते समय ही प्राप्त हुई जिसका निदर्शन पंचम अंक में बीसवे श्लोक में मिलता है। कवि ने नीतिसन्दर्भ, मानस के माती, संस्कृत की पहचान, बदले पंख, अच्छी हिन्दी आदि महत्वपूर्ण प्रकाश्यमान प्रबन्ध उनकी गहन शोध–परक उपलब्धियों के विभिन्न शीर्षकों में संकलित प्रतिफलन हैं।

13. भोज भारती :– भास्कराचार्य त्रिपाठी द्वारा सम्पादित मध्य प्रदेश संस्कृत अकादेमी की संस्कृत हिन्दी मिश्रित सुललित पत्रिका का एक अंक 1992 में प्रकाशित हुआ है। इसमें डॉ0 राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा 18 मन्दाक्रान्ताओं में प्रणीत हिन्दी काव्यानुवाद सहित 'माण्डवम्' काव्य, हरिहर त्रिवेदी की भाषान्तर सहित संस्कृत कविता 'भोजराजः[1] और पहली बार डॉद्ध राजेन्द्र मित्र का 41 स्त्रग्धराओं में निबद्ध 'धारामाण्डवीयम्' खण्ड–काव्य सहृदय जगत् के समक्ष प्रस्तुत हुए है।[2] स्थाली पुलाक– न्याय से भोजभारती का एक पद्य उदाहृत किया जा रहा है –

यः श्रृगारप्रकाशो बुधसदहि मतस्संयुगे सूत्रधारः
स्थापत्ये शालिहोत्रे स्थपतिबहुमतश्शारदाकझठहारः
निष्णातो यन्त्रसिद्धावभिनयसरणौ सार्वभौमो नटानां
भोजोऽभूत्सर्वविद्याविबुधतरूरिहानेहसि श्लोककल्पः।

14. साकेतसौरभम् :– संस्कृत महाकवि डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी का अत्यन्त परिष्कृत और स्पृहणीय महाकाव्य 'साकेतसौरभम्' नाग पब्लिशर्स दिल्ली से प्रकाश्यमान है।

इस प्रबन्ध में अवतार, संस्कार, संकल्प, सहकार, उद्योग, विक्रम, अभिषेक और दिग्विजय–संज्ञक 8 सर्गों में लोकपावनी रामकथा अनूठे ढंग से प्रस्तुत की गई है। पुस्तक की समीक्षा में डॉ0 बालकृष्ण शर्मा ने रामकाव्यों की सुदीर्घ परम्परा में इस महाकाव्य का विशिष्ट सौन्दर्य रेखाकिंत किया है :–

बहवः कवयो जाता रामकाव्यविधायिनः

अभिरामकवित्वे तु प्रथते भास्करः कविः।

महाकाव्य में विभिन्न गीत एंव छन्दों की संख्या 495 है। इस कृति में वाल्मीकि एवं परवर्ती रचनाकारों में राजा दशरथ की वत्सल चेतना का संक्रमण माना गया है (द्रष्टव्य 245–46) कथानक के संवेदनशील स्थलों पर समानान्तर हिन्दी काव्यानुवाद के कारण इस प्रबन्ध के अत्यन्त लोकप्रिय होने की संभवाना है। उदाहरणार्थ संस्कर सर्ग का एक सन्दर्भ है –

चिदारामोऽभिरामोऽभूत् परामर्षविरामकृत्
रामणीयकवान् रामो रमारामो निरामयः।
आदर्शे केशलेशंच विलोक्य धवलश्रियम्
कोशलेशं नृपो रामं विधातुमृपचक्रमे।
जनताऽनुगता नृत्यं चक्रे हर्षप्रकर्षतः
राजद्वारे पुरे ग्रामे वीथ्यां वीथ्यां समेयुषी।
रामो भूमितले भव्यो भवतु राजा, रामो भूमितले।
यजनाज्ज्तो दिनकरवंशे
सगर–भगीरथ सुकृदवतंसे
कुशलो जातश्चय शस्त्रदले
रामाो भूमितले नव्यो भवतु राजा, रामो भूमितले।

साकेतसौरभम् महाकाव्य पर सहृदय मनीषी आचार्य रास्वरूप का मन्तवरू है –

शास्त्रीया विलसन्ति यत्र विविधाः साकेतकाव्ये विधाः
शोभन्ते खलु दर्शनानि निखिलान्यस्मिन् प्रबन्धे नवे
नानालड़कृति–चारूवृत्तरचना भावाः समुद्यद्रसा
आशीर्मंलतो महाकविमुं सर्वेऽभिषिंन्ति वै।

भास्कराचार्य त्रिपाठी द्वारा प्रणीत 'लघु–रघु' काव्य में कतिपय रसमय स्त्रोत ळी हैं, उदाहरणार्थ –

तरलपरिचल–कतिलकलकल–लहरि भगवति कुलजननि सपदि सुरनदि दलय मम खलु दुरितचयमपचय–शमनि।

तव मृदुल–सिकतिल–पुलिनमहमगममतिरूचिकर–खुरलि

शिशुरभवमयि बलकलनमपि न तदकृषि विशकतिलकलि

न खलु चिरयति य उ विविदिषति विधुमुषसि विधुरूचिदमनि।

सपदि सुरनदि .....

हरिचरण–नखलुलितजलकण–रचितशुभतनुरवतरसि

हरशिरसि घनविपिन–समदृशि कृतुकविचरणमनुसरसि

तदनु हिमगिरिमथ धरणिमनुपतसि जलरयमयधमिन।

सपदि सुरनदि ..... इत्यादि।

15 अक्षरा, – (नाग प्रकाशक, दिल्ली 2004)

यह संस्कृत की ललित गद्य कादम्बिनी है। इसमें श्रुति : संस्कृतम् सम–काल : प्रभागों के अन्तर्गत 25 ललित संस्कृतालेख निंबद्ध है यथा आथर्वणी लोकस्थिति : पुराण– प्रज्ञा, कालिदासीय आसवसन्दर्भः न तेजस्तेजस्वी प्रस्तुतमपरेषां विषहते, आधुनिकं नाट्यसाहित्यं तत्प्रवृत्तयश्य, साम्प्रतिकी संस्कृत कविता आदि। छन्दोविमर्शः प्रयाग में संस्कृत के लोकप्रिय छन्दों का अत्यन्त बोधगम्य विधा से व्यावहारिक परिचय दिया गया है। लघुरूपकम् प्रयाग से संस्कृत का आधुनिक राष्ट्रचेतना परक रूपक लक्ष्मीलांछनम् है। यह रूपक चीन तथा पाकिस्तान से हुए युद्धो के समय आस्तिकतापूण भारतीय जन चेतना को रूपायित करता है। छठें यात्रा–गवाक्ष प्रयाग में अमरीका के साथ ही भारत देश के कई नगरों का सजीव वर्णन किया गया है। सातवें समस्या प्रमाण में संस्कृतिः भारती एवं प्रभा आदि शीर्षकों से अत्यन्त रमणीय समस्यापूर्तियां आकलित है। आठवें संवेदनम् प्रयाग के अंतर्गत वाल्मीकि, कालिदास और शंकराचार्य आदि पर मनोरम उद्‌गार संजोए गए है। रचनाकार ने पुरोवाक् में कहा है –

अक्षरा स्यात् सुधा स्वर्गे भूमौ प्रकृतिक्षरा

अक्षरा कविता क्वापि गद्यवाग भुवनेऽक्षरा।।

वाङमये जीवने सेयं गद्यरुपा जिजीविषा।

लोकेऽपि राजते तस्माद गद्यवाक् सर्वदाऽक्षरा[1]

1 पुरोवाक अक्षरा

सम्पूर्णानद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ0 राजेन्द्र मिश्र ने नान्दीवाक् में लिखा हैं– अधुनातनसंस्कृतवाङमयेऽपि तादृग्‌गुणविशिष्टाः केचन प्रतिभापरिष्ठाः पाण्डितीलीमण्डिताः साहिती सूत्रधाराः सत्कवयः वर्तन्ते येषां वशवर्तिनी संलक्ष्यते भगवती भारती। तेषामेवामन्यमाः विराजन्ते साहित्यस्य विविधविधासु कृत भूरिपरिश्रमाः समुपलब्ध लोक प्ररोचनाः मध्यमवयस अस्माकं समेषां सुरभारती सेवकानां नासीरे प्रतिष्ठिताः भोपालवास्तव्याः कवि प्रवराः डॉ. भास्कराचार्य त्रिपाठीवर्याः यदुपज्ञा अक्षराख्या कृतिरिदानी प्राकाश्यमानीयते। इयं कृतिः अर्वाचीन संस्कृतवाङ मयस्य सुप्रतिष्ठं महिमान प्रतिनिधत्ते।

16. महाकवि भवभूति – (राजकमल एण्ड संस नई दिल्ली 2006) स्वराज संस्थान संचालनालय भोपाल की अक्षय निधि पुस्तक प्रकाशन योजना के अन्तर्गत यह सुललित रचना करूणा को कवित्व की आत्मा मानने वाले उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम् तथा मालतीमाधवम् के प्रणेता विश्व के अप्रतिम नाट्य हस्ताक्षर भवभूति पर केन्द्रित है।

प्रस्तुत रचना में डॉ0 त्रिपाठी ने महाकवि का परिवेश और भवभूति की शब्दयात्रा शीर्षक से महाकवि के व्यक्तित्व और कृतित्व का विस्तृत शोधपूर्ण विवेचन किया है। इसके अनन्तर मालतीमाधव उत्तररामचरित तथा महावीरचरित के महत्वपूर्ण नाटकीय अंशों की अनुरचना, पाद टिप्पणी में मूल श्लोकों के साथ प्रस्तुत की गई है, यथा –

शिवके ताण्डव में
बज उठा नन्दी का परवावज
उसे मेघगर्जन जान
निकट उड़ने लगा स्कन्द मयूर
घुस गया बड़ा नाग
फन सिकोड़कर
गणपति के सूँड में

कनपटी पर छिड़ी भैंरों की भनभनाहट
और चीखते गजानन की झूमाझटकी
दर्शकों की रक्षा करे।[1]

अनुरचना के अनन्तर भवभूति का वैदिक प्रस्थान, भवभूति के नारी–रूपाङ्कन, विश्वजमीन समीक्षाएँ, कालिदास और भवभूति शीर्षकों के अन्तर्गत वाग्विभूति भवभूति की व्यापक समीक्षा उपन्यस्त की गई है, यथा –

तारूण्ये कवनीये को धीरः कालिदासमतिशेते।
कारूण्ये कवनीयें, समानधर्मा क्व भवभूतेः।।

17. अरिनाशकदुर्गाशतकम् (काव्यानुवाद) – भारतीय धार्मिक मान्यताओं में देवी दुर्गा ब्रहमाण्ड की महाशक्ति मानी जाती हैं। कवि के पितामह श्री राम गुलाम त्रिपाठी ने लगभग 100 वर्ष पहले एक अत्यन्त मनोरम हिन्दी स्त्रोत–काव्य का अरिनाशकदुर्गाशतकम् की रचना की थी। इस सिद्ध स्त्रोत काव्य का संस्कृत काव्यानुवाद डॉ0 त्रिपाठी ने किया है। कतिपय वंशस्थ एवं अधिकांशतः अनुष्टुप प्रायः 300 छन्दों में संस्कृत रूपान्तरित काव्य की भूमिका में उनका कथन है –

आतङ्कशङ्किते राष्ट्रे शक्तिर्दिव्या प्रवर्द्धताम्
इति प्रस्तूयते काव्यं दिव्यवाचाऽरिनाशकम्।।
पूर्व पितामहेनैष प्रबन्धोऽकारि सिद्धिदः
तस्य हिन्दी समुल्लासः स्वर्गिराऽनूछते मया।।

1. सानन्दं नन्दिहस्ताहतभुरजरवाहूतकौमारवर्हि –

भासाभासाग्ररन्ध्रं विशति फहिरपतौ भोगसङ्कोचमाजि

गण्डोड्डीनालिमालामुखरितककुमस्ताण्डवे शूलपाणे –

वैनायक्यश्चिरं वो वदनविधुतयः पान्तुचीत्कारमवत्यः । मालतीमाधव 1.2

दुर्गाशतकम् के संस्कृत काव्यानुवाद अत्यन्त ललित बन पड़े हैं, उदाहरणार्थ – (हिन्दी पद्य)

छार को सँवारितूँ पहारहूते मारी करै सरिस पहारको उड़ावै करिछार है।।

रंक को नेवाजि पुरहूतहू ते ऊँचो करै सरिस पुरन्दर फिरावै द्वांर द्वार है।।

भ्रुकुटी बिलासते जगत उपजावै तैंही पालै फिरिनाशत न लोगै नेक वार है।।

अक्षय प्रताप तेरे राम को गुलाम द्विज संकट परे ते द्वार करत पुकार है।।

(संस्कृत काव्यानुवाद)

गिरेरपित गरीयान् स्यांत त्वया स्पृष्टो रजः कणः

उद्धूयते गिरीन्द्रोऽपि देवि धूलीकृतस्त्वया।।

कृपापात्रीकृतो रकः पुरूहूतप्रभुर्भवित्

इन्द्रोऽपि चान्यथा भिक्षुर्द्वाराद् द्वारं प्रपद्यते।।

जगत् संसृज्यते देवि त्वया भृकुटिलीलया

पाल्यते तदिदं किंच निमेषेण विनाश्यते।।

त्वमक्षतप्रतापाऽसि क्षतोऽयं रामकिङ्करः

देहल्यां पतितस्त्राणं याचते दुःखितो दविजः।।

18. मधुमती – डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी की राष्ट्र एवं प्रकृति सम्बंधी संस्कृत–गीतियों का द्वितीय संकलन है – मधुमती। यह नाग पब्लिशर्स दिल्ली द्वारा 'निलिम्पकाव्यम्, षष्ठस्पन्दः' प्रकाशनशीर्ष के अन्तर्गत सामने आया है। इस संकलन में संस्कृति की प्रगति शील गीतधारा के बदलते हुए तेवर देखने को मिलते है, उदाहरणार्थ –

त्रिरंग़ केतनम्

कबन्धैः कीर्णमातङ्कः दिगन्ते कीलयिष्यामः

त्रिरंग केतनं शीर्षैं, रिपूणां वेल्लयिष्यामः।।

चिरं स्वाधीनता जाता सुदूरं दासता याता

प्रसूनैः संगता व्योम्नः, सुधाया वृष्टिरायता

तदस्यां श्यामिकामग्नान्, श्रृगालान् क्षालयिष्यामः

त्रिरंग केतनं शीर्षे, रिपूणां वेल्लयिष्यामः।।

प्रशस्यं भवेत्

अर्चनं ध्यानशीलं प्रशस्यं भवेद्

सर्जन तानशीलं प्रशस्यं भवेत्

दुःखदैन्यार्दितं मानवं पश्यतो

जीवनं दानशीलं प्रशस्यं भवेत्।।

युग–बोधः

चरित्रं चाटुकाराणां, दिवा चन्द्रप्रचाराणाम्

न जानीते स्वयं ब्रहमा, कथा का शब्दकाराणाम्।।

स्फुरत्खघोतपुच्छाग्रे, चिरं दीप्रभां पश्यन्

निकाये घूमकेतूना–महो विधुद्विभां पश्यन्

क्व यायात् संस्कृतो लोकः, प्रभावादन्धकाराणाम्

न जानीते स्वयं ब्रहमा, कथा का शब्दकाराणाम्।।

19 . ऋतुमाला – यह निलिम्पकाव्यम् प्रकाशनमाला का सप्तम स्पन्द है। वैदिक वाङ्मय से लेकर आज तक साहित्य एवं लोकवीथियों में ऋतुवर्णन की अवच्छिन्न परम्परा रही हे। मातृभूमि के वात्सल्य की सहज अनुभूति वस्तुतः विभिन्न ऋतुभाड़िगमाओं में ही मिलती है। इस दृष्टि से भारतभूमि समूचे विश्व में सर्वाधिक सम्पन्न और सपृह्णीय है। नाग पब्लिशर्स दिल्ली से प्रकाश्यमान ऋतुमाला में कवि ने आज के औद्योगिक प्रगतिशील राष्ट्र में पर्यावरण का अवशेष सँजोए हुई ऋतुओं के अतीत हृदयहारी काव्य चित्र अंकित किए हैं, यथा –

ग्रीष्मः

दिवसाः संकुलनीडा यामिन्यो नीतचन्द्रिकाक्रीडाः

काम्या परं प्रदोषा ग्रीष्में नीरस्फुरत्क्रीडाः।।

क्वापि नाम्बु लभमाना मृगजललहरीबु हर्षिता रजकी

छियाँ छियाँ स्वनशीला शून्ये वस्त्राणि मार्जयते।।

वसन्तः

प्रसूनानां कोषो नवलपरितोषो मधुलिहां

खगानामाक्रन्दः सुरभिमकरन्दः प्रतिदिशम्।

अयं केलीरंग, समुदयदनंगः पुनरहो

ऋतुनामीशो रसमयवितानो विजयते।।

सन्दर्भ सूची

1 स्नेहसौवीरम नाटक डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी

2 नाटय शास्त्र भरतमुनि

3 अजाशती बाल–कथा काव्य

4 गद्यद्वादशीं

5 ऋतुमाला

6 मधुमती

7 अक्षरा

8 अरिनाशकदुर्गाशतकम

9 महाकवि भवभूति

10 मालतीमाधव उत्तररामचरित तथा महावीरचरित

11 महाकाव्य 'साकेतसौरभम्' नाग पब्लिशर्स दिल्ली

12 भोज भारती

13 लघु–रघु

14 निर्झरिणी